शरारती पहाड़ी भेड़ा

प्रथम संस्करण १६८४

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

मुद्रक : **विदेशी भाषा मुद्रणालय**
१६ पश्चिमी छकुङच्वाङ मार्ग, पेइचिङ

वितरक : **चीनी प्रकाशन विक्रयकेन्द्र (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. बाक्स ३६६, पेइचिङ

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

शरारती पहाड़ी भेड़ा

रूपान्तरकार और चित्रकार : **चान थुङ**

मंगोल जाति की बालकथा

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

एक छोटा पहाड़ी भेड़ा था। वह न तो कोई काम करता था और न ही किसी का कहना मानता था। एक दिन उसके दादा ने उसे एक घंटी दी और कहा : "यह घंटी लो और गले में लटका लो। जब कोई जरूरी काम हो, तो इसे बजाना।"

यह कहकर दादा चले गए। अभी वे कुछ ही कदम
गए होंगे कि घंटी बजने लगी।

"एक मधुमक्खी मेरे सिर पर बैठ गई!" पहाड़ी भेड़ा चिल्लाया। "हाय! यह बच्चा इतनी सी बात के लिए भी दादा की मदद चाहता है!" दादा ने एक लम्बी सांस छोड़ी।

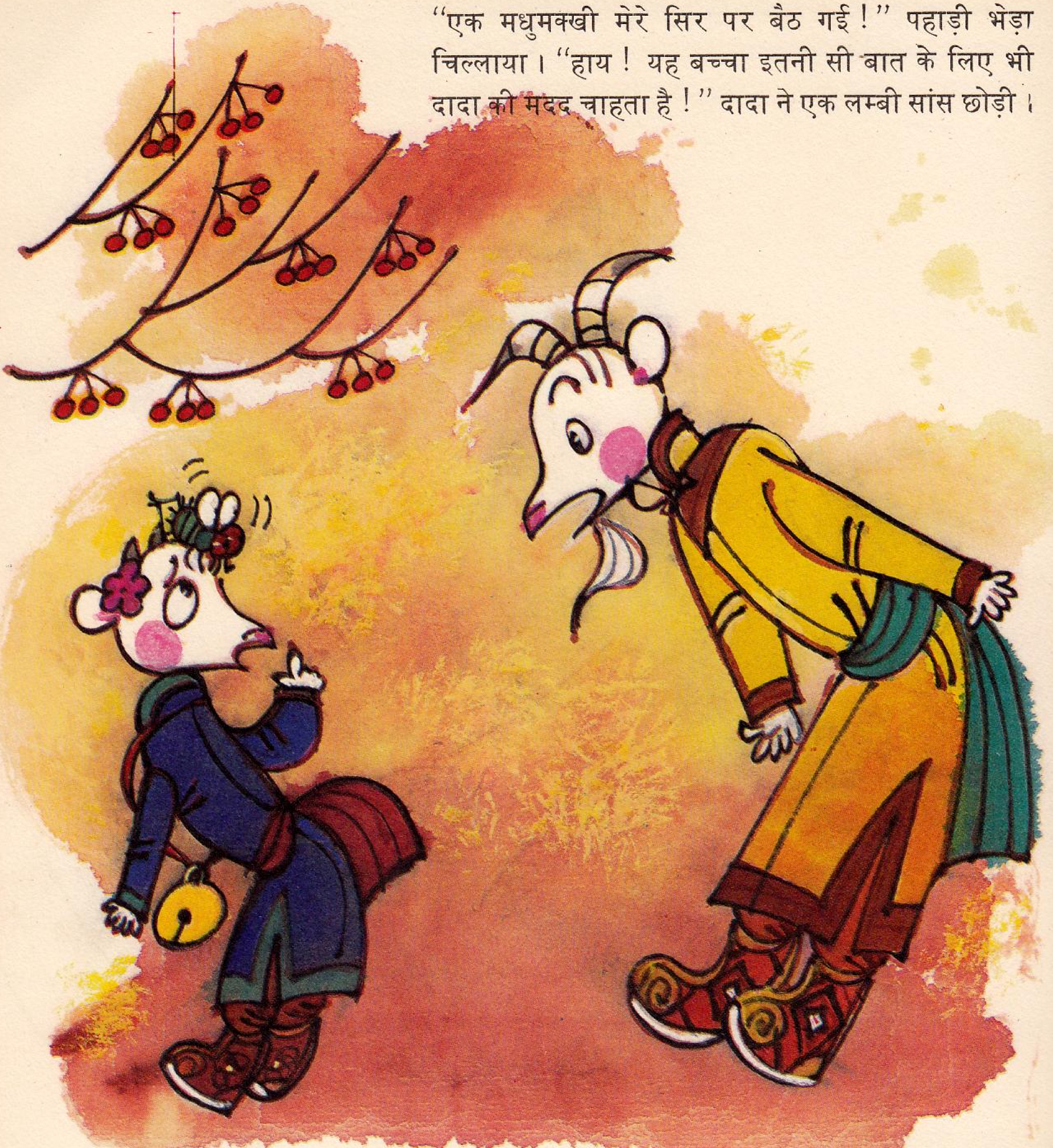

दादा कुछ कदम और चले होंगे कि घंटी फिर बजने लगी।

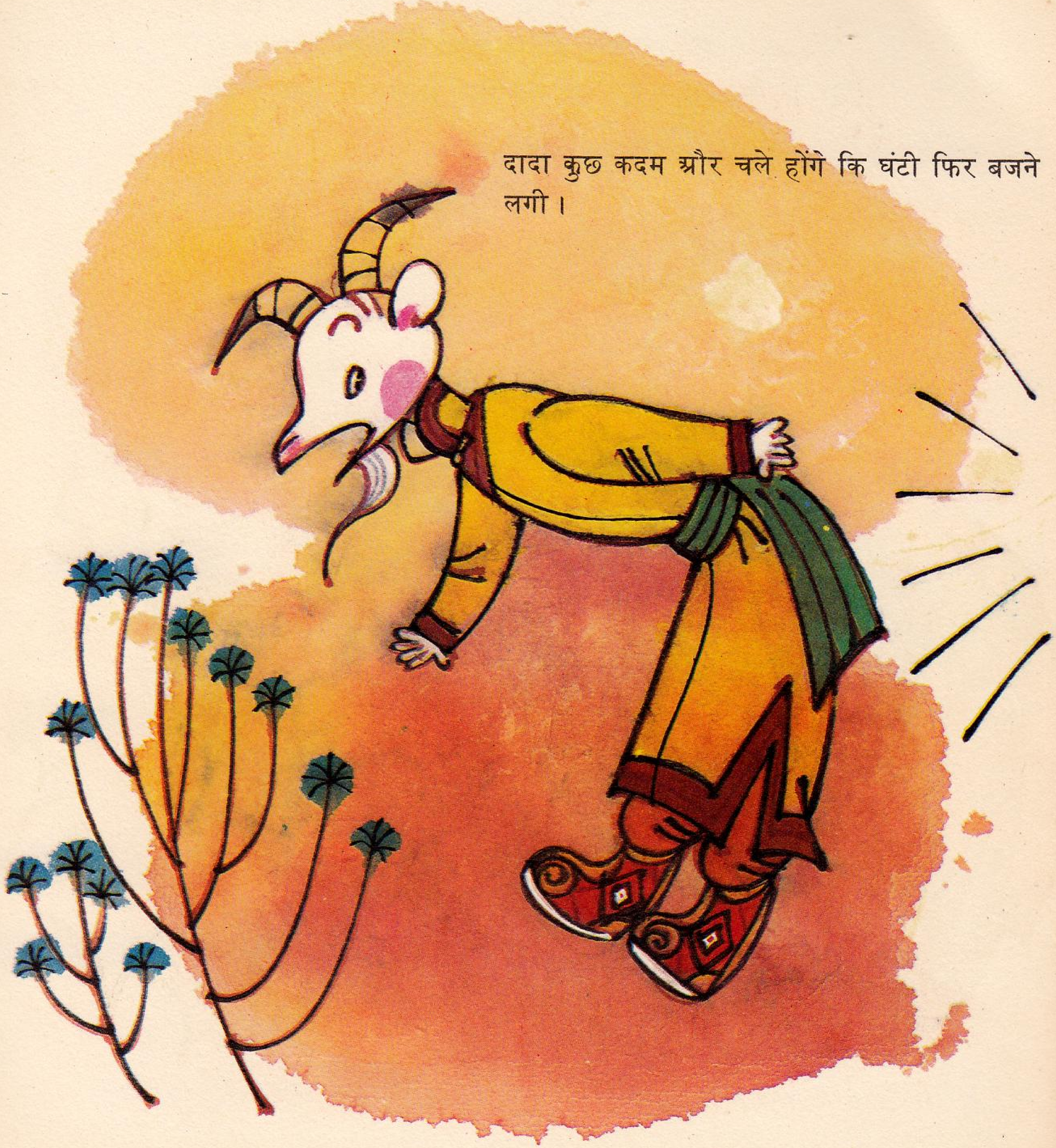

"दादा जी, जल्दी मेरी मदद के लिए आओ, घास का तिनका मेरी पीठ पर गिर गया है !" "बड़े बदतमीज हो, तुम !" दादा उसके पास आकर नाराजगी से बोले ।

एक दिन दादा लकड़ी काटने चले गए। पहाड़ी भेड़ा जोर-जोर से घंटी बजाने लगा। "फिर वही शरारत होगी !" दादा ने मन ही मन सोचा और अनसुना कर दिया।

लेकिन इस बार पहाड़ी भेड़ा जोर-जोर से चिल्लाता हुआ रो रहा था। दरअसल एक भेड़िया उसे खाने वहां आ पहुंचा था। लेकिन दादा ने समय पर पहुंचकर भेड़िए को मार भगाया।

दादा ने पहाड़ी भेड़े से कहा : "आइंदा, इस तरह की शरारत मत करना। जब बहुत जरूरी हो, तभी घंटी बजाना।" यह सुनकर पहाड़ी भेड़ा शर्म से पानी-पानी हो गया और उसने दादा की बात गांठ बांध ली।

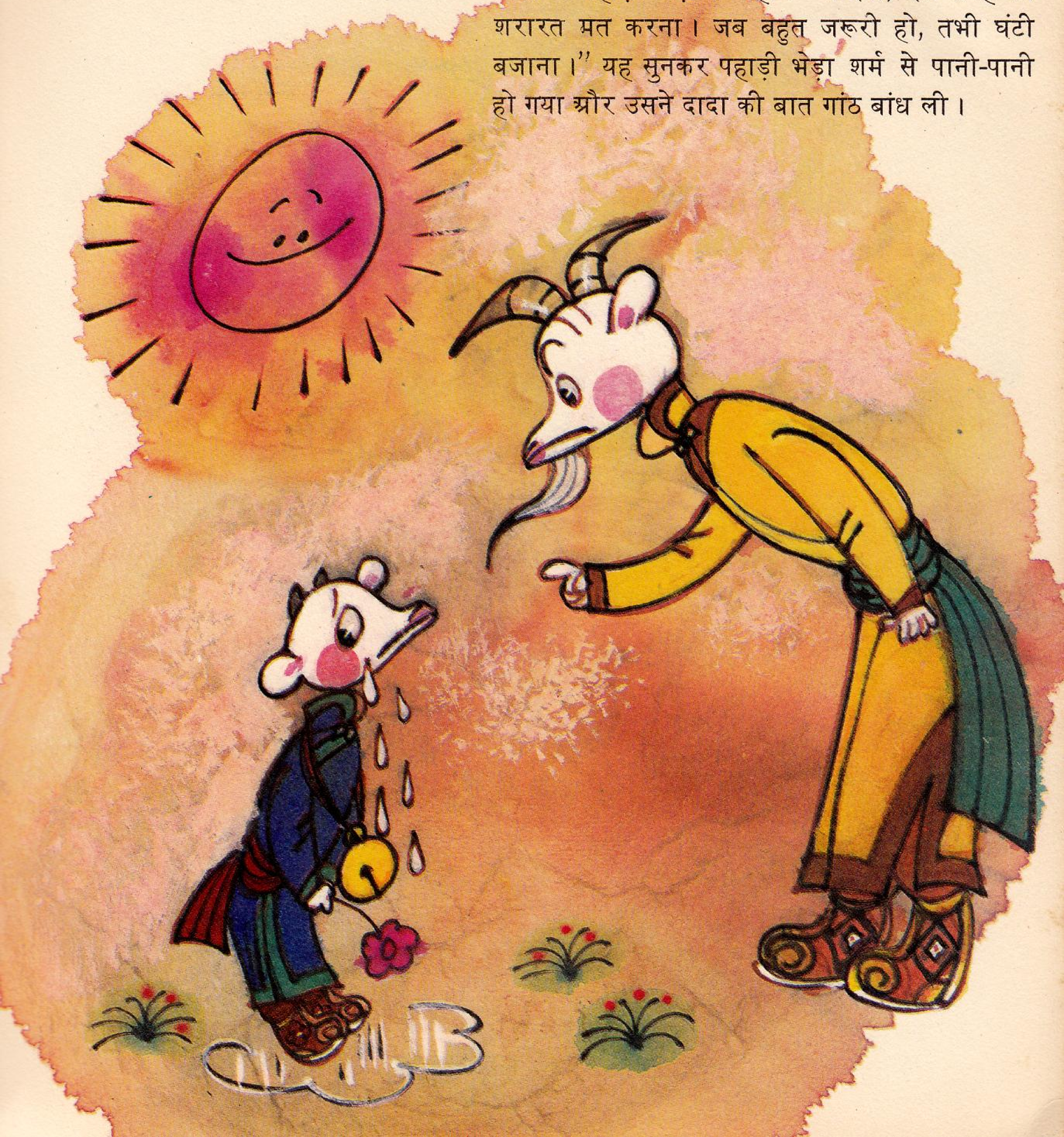

चूहा और बारहसिंगा

रूपान्तरकार और चित्रकार : **चान थुङ**

ताए जाति की बालकथा

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

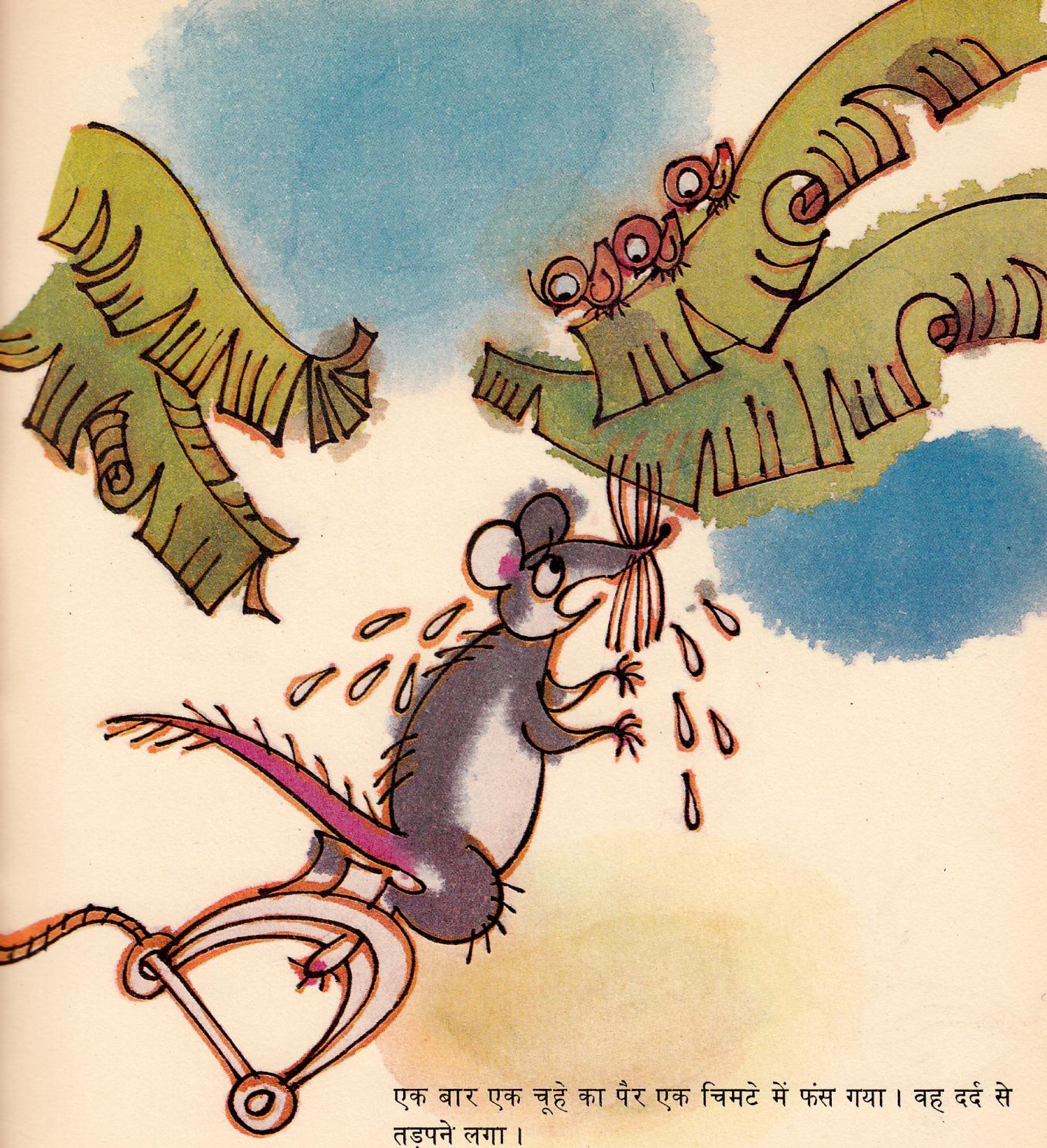

एक बार एक चूहे का पैर एक चिमटे में फंस गया। वह दर्द से तड़पने लगा।

चूहे ने देखा कि एक जंगली भैंसा चला आ रहा है। उसने भैंसे से कहा : "आप महाबली हैं, मुझे इस चिमटे से छुड़ा दें। मैं आपके अहसान का बदला जरूर चुका दूंगा।"

"हुं! तुम जरा-से तो हो, भला मेरे अहसान का बदला कैसे चुकाओगे?" यह कहकर भैंसा सिर हिलाता हुआ चला गया।

कुछ देर बाद एक भालू आया। चूहा गिड़गिड़ाया "आप बड़े ताकतवर हैं। इस गरीब पर दया करें और मुझे मुक्त करें। मैं आपके अहसान का बदला जरूर चुका दूंगा।" "हा, हा, तू छोटा-सा जीव! तू बिल खोदने के अलावा और कर ही क्या सकता है? परे हट!" यह कहकर भालू आगे बढ़ गया।

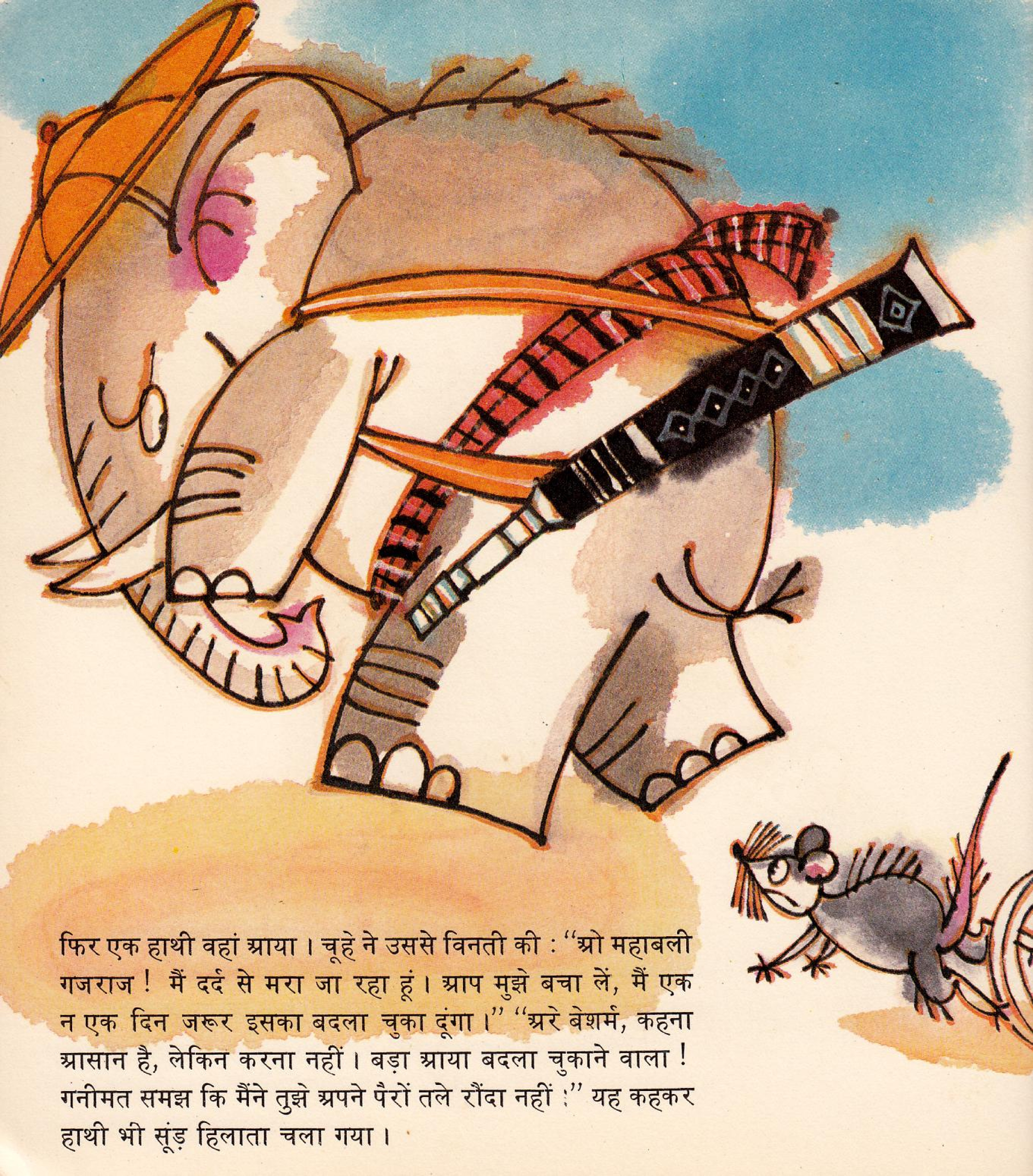

फिर एक हाथी वहां ग्राया । चूहे ने उससे विनती की : "ग्रो महाबली गजराज ! मैं दर्द से मरा जा रहा हूं । ग्राप मुझे बचा लें, मैं एक न एक दिन जरूर इसका बदला चुका दूंगा ।" "ग्ररे बेशर्म, कहना ग्रासान है, लेकिन करना नहीं । बड़ा ग्राया बदला चुकाने वाला ! गनीमत समझ कि मैंने तुझे ग्रपने पैरों तले रौंदा नहीं !" यह कहकर हाथी भी सूंड़ हिलाता चला गया ।

इस बार एक बारहसिंगा चूहे के रोने की आवाज सुनकर उसके पास आया।

"हिरन भाई, भगवान तुम्हारा भला करे! मुझे इस मुसीबत से छुटकारा दिला दो। मैं तुम्हारा अहसान कभी नहीं भूलूंगा।" चूहे ने जंगली भैंसे, भालू और गजराज के बारे में, जिन्होंने उसकी मदद करने से मना कर दिया था, बारहसिंगे को बताया।

बारहसिंगा बोला : "तुम सचमुच इतने छोटे हो कि मैं तुमसे बदले में किसी अहसान की आशा नहीं करता, फिर भी तुम्हारी मदद जरूर करना चाहता हूं।" यह कहकर बारहसिंगे ने चूहे को चिमटे से छुड़ा दिया।

संयोग से एक दिन बारहसिंगा खुद एक शिकारी के जाल में फंस गया ग्रौर किसी भी तरह निकल न सका।

चूहे ने आकर देखा कि हिरन जाल में फंस गया है। उसने फौरन अपने तेज दांतों से जाल काटकर हिरन को मुक्त कर दिया।

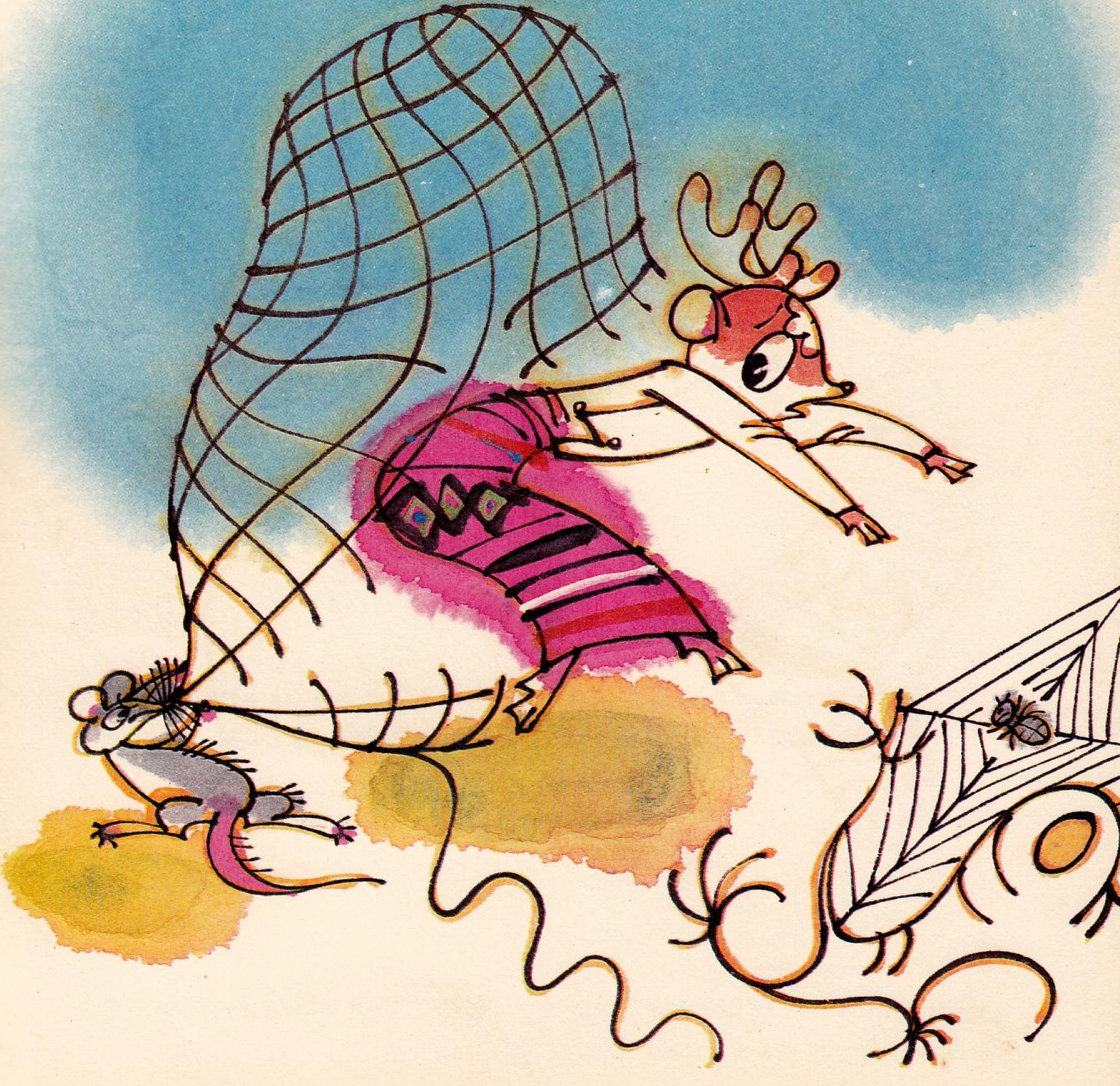

HBC/23

बारहसिंगे ने चूहे का शुक्रिया अदा किया। चूहे ने कहा : "इसमें शुक्रिया की क्या बात है ? तुमने भी तो एक बार मेरी मदद की थी।"

चीन की बालनीति कथाएं

中国童话
不听话的山羊
詹同 编绘
*
外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
（北京399信箱）
1984年（20开）第一版
编号：（印地）8050—2349
00060
88—H—241P